दिनांक : 14 अप्रैल, 2014

चुनाव प्रचार डायरी - 14/04/2014

-अरुण जेटली

राज्य सभा में विपक्ष के नेता

कांग्रेस की निराशा दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। दो राष्ट्रीय अखबारों में खबर छपी है कि कांग्रेस के अंदर क्या कुछ हो रहा है। पहली खबर में कहा गया है कि निराशा इतनी अधिक है कि मोदी को रोकने के लिए, प्रियंका गांधी नरेन्द्र मोदी के खिलाफ वाराणसी से चुनाव लड़ने के लिए राजी हो गई थी। एक अन्य अखबार में खबर छपी है कि कांग्रेस के मुख्यमंत्रियों से कहा गया कि अगर आप सीटें जीत नहीं पाए तो आपको हटा दिया जाएगा।

अगर दोनों खबरें सही हैं, तो इससे इस बात की पुष्टि होती है कि कांग्रेस वास्तविकता से कितनी दूर है। गांधियों को घेरा जा रहा है। स्थिति ठीक वैसी है जैसी स्थिति का सामना 1977 के आम चुनाव में इंदिरा गांधी और संजय गांधी को करना पड़ा था। आर्थिक लोकप्रियता काम नहीं कर पाई। परिवार का करिश्मा खत्म हो गया। लेकिन एक ऐसी पार्टी जो एक परिवार के आसपास ही घूमती है, उसे अहसास हो चुका है कि परिवार का वर्तमान नेता असरदार नहीं है। इस समस्या का वास्तविक समाधान कांग्रेस को अधिक संगठित पार्टी बनाना है। कांग्रेस पार्टी का समाधान है, कि परिवार का एक पदस्थ सदस्य अगर विफल होता है, उसका विकल्प परिवार को कोई अन्य सदस्य ही होगा। अपने पहले के लेखों में मैं इसका अनुमान व्यक्त कर चुका हूं। मेरी एक ही इच्छा है कि हताशा में वाराणसी के लिए जो समाधान ढूंढा गया था वो वास्तव में अमल में आ जाता। परिवार के बाकी सदस्यों के बारे में जो अवधारणा बनी हुई है उसको भी सामने लाया जाए।

समस्या कांग्रेस के मुख्यमंत्रियों के साथ नहीं है। अगर कांग्रेस पराजित होती है, तो ऐसा उसके मुख्यमंत्रियों की वजह से नहीं होगा। इसका कारण उन्होंने जिस तरीके से सरकार चलाई उसकी गुणवत्ता और राहुल गांधी का प्रेरणाविहीन व्यक्तित्व है। जब समस्या परिवार के अंदर है, कांग्रेस बाहर बलि के बकरे क्यों ढूंढ रही है?

lH; puko e dIVu vefjUnj flg %

कैप्टन साहब के पास राजनीतिक भाषणों का स्तर गिराने की अद्धभुत क्षमता है। मुद्दों पर आधारित सभ्य चुनाव में, वह जल बिन मछली है। मेरी अपने सभी मित्रों, समर्थकों और अमृतसर में मेरे शुभचिंतकों को सलाह है कि हमें यह चुनाव शिष्टता और गरिमा को बनाए रखते हुए लड़ना चाहिए और इसे मुद्दों पर आधारित रहने देना चाहिए। अमृतसर में देखा गया कि लोगों की इच्छा है कि नरेन्द्र मोदी देश के अगले प्रधानमंत्री बनें। मैं अपने और उठाए गए मुद्दों के प्रति लोगों का सकारात्मक रवैया देख सकता हूं। हमें इस एजेंडा से नहीं हटना चाहिए।

कैप्टन ने मुझे बाहरी व्यक्ति कहा। उनके विपरीत, मेरी नसों के अंदर शत–प्रतिशत माझा खून बहता है। मैंने वादा किया था कि मेरे बाप दादों का शहर होने के नाते, मेरी यहां रिहायश रहेगी। मैं इस वादे को अमल में लाया। कैप्टन का खुद का क्या है? क्या अमृतसर की जनता को उनसे मिलने के लिए पटियाला पैलेस के बाहर कई दिन तक इंतजार करना पड़ेगा?

★★★★★